कहानी - दरद न जाने कोय

बुआ के मरते ही फेरे फूफा को बुढ़ापा ने घेर लिया। छः माह में ही यौवन का परदा कुछ ऐसा गिरा कि आँखों की चमकती पुतलियाँ मंद पड़ गईं। हर फिक्र को धुएँ में उड़ाने वाले अल्हड़ फूफा की खुशियों पर ग्रहण लग गया। गाने के चक्कर में रात-रात घर से बाहर रहने वाले फूफा, मड़ई से बाहर ही नहीं निकलते। घास-फूस की यह मड़ैया गोया राम की पर्णकुटी हो, जिसकी सानिध्य नहीं त्याग पाते फूफा।

गायिकी उनका जीवन तैल था। नाम था, उनका धन था। सम्मान था, उनका अस्तित्व था। इलाके में कोसों तक लोकसंगीत में उनका कोई प्रतिस्पर्धी न था। माँ भारती स्वयं उनके कंठ से गाती थीं। जब वे अलापते, 'कोई ससुरे मा दै देऽ सनेश, नैहरे मा आग लगी।' तो ऐसा दर्द भरा निरगुन सुनकर पेड़-पौधे भी नम पड़ जाते।

जवानी में उनके नाम का ऐसा यश फैला कि ससुराल में नेवासा पर रहने वाले फूफा, सामान्य परिपाटी के विपरीत ग्रामवासियों के अक्षि-कंटक होने के बजाय, पूरे गाँव के लाडले हो गए। वस्तुतः फूफा इस गाँव के नहीं हैं, यह उनका ससुराल है। बुआ के माता-पिता को अन्य सन्तान न थी। अतएव गौने के चार गँवही बाद ही बुआ माता-पिता की उत्तराधिकारी बनकर मायके में रहने लगीं। उनके पीछे फूफा भी आकर्षित भ्रमर की तरह चले आए।

समय से कुछ ऐसा बन पड़ा कि पराए गाँव से आया हुआ लम्बा, छरहरा, साँवला राम फेरन, जो एक बोल 'फूफा' सुनने के लिए तरसता था, बच्चे बूढ़े जवान सभी का फूफा हो गया। गायकी ने ऐसा आदर लुटाया कि वह पूरे गाँव का हो गया और समूचा गाँव उसका। आधी, आधी रात तक यूँ उसकी गीत मंडली सजने लगी कि बहुधा बुआ की रातें एकाकी बीतने लगी। प्रणय सेज पर लेटी बुआ का समय अधिकांशतः कल्पनाजनित नर्म चुहलों व स्पर्शों के मध्य कटने लगा। तो भी बुआ को मलाल नहीं, पति का यश ही उनका सेज सुख बन गया। ज्यों-ज्यों यौवन निखरता गया, फूफा की गायकी भी प्रसिद्धि का पताका गाड़ने

लगी। फूफा जी जितने अच्छे गायक थे, इन्सान उससे भी अधिक अच्छे थे। सरलता और तरलता उनका सबल चारित्रिक गुण था।

फागुन का महीना था। एक बार खरगूपुर थाने में साप्ताहिक फाग मनाया जा रहा था। दूर-दराज से लोक गवैयों की टोली आमंत्रित थी। एक टोली, पहले दिन से ही जीतती आ रही थी। उसे बहुत दम्भ हो गया, सर्वोच्चता का। वह खुल्लम-खुल्ला चुनौती देता, सामना करो। जीते तो ढोल, झाँझ, मजीरा सब तुम्हारा नहीं तो अपना सब साज-सामान छोड़कर जाना होगा। साज खोने के भयवश अधिकांश गायक पहले ही हार मान लेते। उस जमाने में ढोल, मजीरा, झाँझ बहुत बड़ी पूँजी थी, जिसे लुटाकर दुबारा जुटा पाना कठिन था।

फूफा को अंतिम दिन सूचना मिली। फिर क्या? दल साजकर साँझ को चार कोस जमीन पैदल चलकर पहुँच गए, थाने के अंदर। थानेदार रसिक था, बोला, "शर्त मालूम है?"

"हाँ हुजूर।" पूरे आत्मविश्वास के साथ फूफा ने हाथ जोड़कर कहा।

वह उन्हें आदरपूर्वक सभा में ले गया। उस विजयी गायक ने देखा, चार दिन का लौंडा उससे दो-हाथ करने आया है। हँसा, खूब हँसा ठठाकर। मति मारी गई है लौंडे की। फूफा ने कोई ध्यान न दिया। उन्हें तो अर्जुन की तरह सिर्फ चिड़िया की आँख दिखती थी। अखाड़ा जमा। सुर की देवी की वन्दना हई। फिर फूफा ने ऐसा समा बाँधा कि वह गायक उनके पास भी न फटक सका। जनता ने फूफा को विजेता घोषित किया। थानेदार ने पचास रुपए का नकद इनाम दिया।

"क्यों उस्ताद शर्त तो याद है?" थानेदार ने दम्भी गायक से कहा।

उन सज्जन ने लज्जित होकर अपना सारा साजो-सामान फूफा के चरणों में रख दिया। फूफा ने एक बार सिर से पाँव तक उसे देखा फिर साज उसे लौटा दिया और कहा, "भगवान की दी हुई चीज पर दुबारा कभी घमंड मत करना।"

उन फूफा के अब बोल ही नहीं फूटते। गले में कंठमाल हो गया हो मानो। जिह्वा पर ताला लग गया हो। कैसी अनाम, अघट, अनिर्वचनीय पीड़ा! अपने, पराये, किसी से, न कुछ कहते, न सुनते। चुपचाप, अनिमिष क्षण भर व्यक्ति को, फिर देर तक आसमान को निहारते और भादों की बादलों की तरह आँखों की कोर बरस पड़ती।

स्वादलोलुप फूफा को भोजन से निर्वेद उत्पन्न हो गया। व्यंजनों के नाम पर घंटों तक दूसरे का चूल्हा झाँकने वाले फूफा से एक निवाला न तोड़ा जाता।

फूफा के कंठ में उत्साह न रहा तो लोगों के पास फूफा के लिए समय नहीं रहा। प्रारम्भ में कुछ दिनों तक तो कुछेक लोगबाग हाल-चाल के लिए आते रहे किन्तु धीरे-धीरे कुशलक्षेम का यह सिलसिला भी बंद हो गया। जिस लोक, समाज के लिए फूफा ने अपना जीवन, अपना यौवन- पत्नी का अधिकार निछावर कर दिया, वे आज फूफा को त्यागकर मनोरंजन के नए स्रोत खोजने लगे। उपेक्षा बढ़ती रही, फूफा का गम बढ़ता गया। बेटा तो न, पतोहू नए-नए व्यंग्य बाण साधने लगी। वह उनको सुना-सुनाकर पड़ोसिनों से कहती, "मियाँ में बुढ़ापे में इश्क जागा है। सारी जवानी पत्नी ने चारपाई पर तारे गिन-गिन काट दिए। अब उसकी मृत्यु पर मजनू बन रहे हैं।"

फूफा का दूर गाँव में एक मित्र रहता था। वह उनके कई गायन उपलब्धियों का साक्षी था। काफी दिन हो गए थे, उसे उनसे मिले हुए। वह योजना बना ही रहा था कि उड़ते-उड़ते फूफा की रुग्णावस्था की खबर उसके कानों तक पहुँची। रात बीता, सबेरे से दोपहर होते वह उनके घर पहुँच गया। फूफा फूस की मड़ैया में खाट पर आँख मूँदे लेटे थे। साँवला चेहरा समय के थपेड़े सह जगह-जगह भुने आलू की तरह चितला हो गया था। यह वही मड़ैया थी जहाँ फूफा ने बुआ के साथ जगन्नाथपुरी यात्रा के पश्चात श्रीमद्भागवत कथा सुनी थी। उसने देखा, एक कोने में लकड़ी की वही मचिया पड़ी थी, जिस पर बैठ वह फूफा के जयश्री वरण कर आने पर, उनसे कार्यक्रम का आँखोंदेखा हाल सुनती और पंखा झला करती थीं।

स्मृतियों के कई चित्र उसकी आँखों में टहल गए। थाने से जयश्री ओढ़कर टोली सहित फूफा घर पहुँचे। बुआ ने हाल जाना तो उत्साह ने खुशियों के पंख लगा दिए। बिना भोजन किए कोई नहीं जाएगा, हिदायत देकर वह भोजन पकाने लगीं। पना, फुलौरी, उड़द, भात और दही बड़ा! इतना स्वादिष्ट, इतना मीठा कि डकार पर डकार आने के बाद भी मन न भर रहा था। भोजन उपरांत सभी अपने-अपने घर चले गए। उसका गाँव दूर था। बुआ ने रोक दिया, "लम्बा चलके आओ हो, दूर जाना है। सबेरे जाना।" उनकी बात वह न काट सका, रुक गया।

रात को उसने पूछा, "भउजी! भैया का रात-रात भर आपसे दूर रहना, खलता नहीं?"

"शंकर भैया, एक बात कहूँ। संसार का कोई पुरुष अपनी पत्नी या बहुत अधिक परिवार को खुश रखता होगा। ..तेरे भैया तो जग-जँवार कइयों परिवार व स्त्री-पुरुषों को प्रसन्न करते हैं। भला इससे बड़े सौभाग्य की बात क्या होगी कि ऐसा आदमी मेरा मरद है।" कहकर उन्होंने फूफा की ओर मुस्कराकर देखा।

बुआ के हृदय की विशालता के आगे वह बौना हो गया। मन ने कहा, 'भैया बड़भागी हैं।'

फूफा के जर्द चेहरे पर उसने हाथ रख दिया।

"शंकर!" फूफा ने तपाक से आँखें खोल दी, "आ गया? कोई सनेश(सन्देश) गया था?"

"मुझे तो आना ही था।..यह क्या हो गया भैया?"

"तेरी भउजी मुझे अकेला छोड़ गईं।" कहकर मित्र से लिपट गए वे। दोनों रोने लगे।

"भैया, वह तो है पर आप खाट पकड़ लिए?" थोड़ी देर बाद आँसू पोछकर उसने कहा।

"क्या करूँ, तेरी भउजी जीवन-बाती जो थीं।"

"आप समझदार हैं। संसार की सच्चाई जानते हैं फिर..?"

"सब समझता हूँ रे! पर सुरति से वह हटती ही नहीं।"

"भैया, अब आपको अपनी गायकी में ही भउजी का रूप देखना होगा। गाना बंद नहीं करना है। अन्यथा भउजी की आत्मा को दुःख पहुँचेगा। वह आपके गानों की कितनी बड़ी कद्रदान थीं! यही उनके प्रति सच्ची सिरद्धांजलि होगी।"

"अब कहाँ रे! उम्र ने आधे दाँत ले लिए और उनका वियोग स्वर। बोल में अब वह माधुरी न रही।" कहते हुए फूफा बिस्तर पर गिर पड़े।

मित्र चुपचाप उन्हें देखता रहा। थोड़ी देर मौन पसर गया। फिर अपने दोनों नयन शंकर के चेहरे पर टिकाकर मौनता भंग कर फूफा ने पूछा, "क्या बात है शंकर?"

वह सकपका गया।

"क्..कुछ नहीं भैया।"

"चल कह दे। संकोच न कर।"

उसने टालने की बहुत कोशिश की किन्तु फूफा के पारखी नेत्रों ने भेद उगलवा ही लिए।

"मेरे गाँव में एक कीर्तन मंडली ने गायकी की प्रतियोगिता रखी है। उसे बहुत घमंड है। मैं चाहता हूँ आप उसमें भाग लेकर उसे हराएँ।" मित्र ने रहस्य खोला।

"नहीं शंकर, अब मुझमें गायकी न रही। सुर, ताल सब बिगड़ गए। तेरी भउजी के साथ ही मेरे गीत मर गए।"

काफी न-नुकुर, रिसा-बासी दोनों ओर से हुए। अंत में मित्र की आग्रह पर फूफा कार्यक्रम के लिए मान गए। नियत तिथि पर शंकर के गाँव के बाहर मंदिर में प्रतियोगिता हुई। उधर स्त्री-पुरुषों की युगल टीम, इधर फूफा का बुजुर्ग पुरुष दल। शुरुआत में फूफा बढ़त पर रहे। तीसरे राउंड में उधर की स्त्री ने गाया, "दो हंसों का जोड़ा बिछड़ गयो रे..!"

जवाब फूफा की ओर से होना था। ढोलकिया और मजीरची ने ताल ठोंका किन्तु फूफा के बोल ही न फुटे। साथी ने लहकारा। शंकर ने हौसला बढ़ाया। किन्तु न तो न। बोल ही न साथ हुए फूफा के, सिवाय आँसुओं के। विपक्षी टीम जीत गई।

पहली बार अनरथ हो गया। फूफा हार की बदनामी ओढ़कर घर लौट आए।

साँझ को उन्होंने खेत घूमा। बुआ के दाह-स्थल पर टहले। रात को बेटा दूध-रोटी लेकर आया तो उन्होंने एक कौर तोड़कर उसे लौटा दिया और कहा, "दुल्हिन का ध्यान रखना।"

सुबह आजान हुआ, शंख बजा। चिड़िया बोली, कुत्ते भौंके। किन्तु फूफा न बोले। बेटे ने देखा। बहू ने देखा। गाँव ने देखा। शांत! हिम! बिल्कुल निर्मल फूफा का मुखमण्डल!

"बुआ का वियोग न सह पाए, फूफा।" एक स्वर फूटा। दो-चार गर्दनें हिलीं।

बाँस की टिकठी के पास हलचल हुई। कान दौड़ पड़े। मूँज की बाध लपेटते हुए तीन-चार बतकौए मुहा-मुहव्वल कर रहे थे, "फूफा, हार का सदमा न बर्दाश्त कर सके।"

-रोहिणी नन्दन मिश्र

पत्राचार:- गाँव- गजाधरपुर, पोस्ट- अयाह, इटियाथोक, जनपद- गोण्डा,

उत्तर प्रदेश , पिन कोड- 271202, मो० न०- 6009126009